B.A I

डॉ. ओमेश मल्लिक
इतिहास विभाग

बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद बिन्दुसार मगध का सम्राट बना। एक जैन गाथा के अनुसार बिन्दुसार की माँ 'दुर्धरा' थी। ~~जिसका~~ जन्म के समय माथे पर विष का एक बिन्दु पड़ा था। इसलिए इसका नाम बिन्दुसार पड़ा। बिन्दुसार भारतीय साहित्य में और विदेशी साहित्य में विभिन्न नामों से जाना जाता है। वायुपुराण में इसे भद्रसार कहा गया है। चीनी विश्वकोश में इसको बिन्दुपाल नाम से पुकारा गया है। यूनानी लेखकों ने बिन्दुसार को अमित्रोचेडस (अमित्रघात) अमित्रोचेट्स और अलित्रोचेडस नामों से संबोधित किया है। किन्तु उसका प्रचालित नाम बिन्दुसार ही था। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार, इसकी 16 रानियां थी, परन्तु उनमें 'सुभद्रांगी' प्रमुख थी।

चाणक्य बिन्दुसार का भी मंत्री रहा। तिब्बती इतिहासकार तारानाथ का मत है कि चाणक्य ने 16 राज्यों के राजाओं और सामन्तों का विनाश किया और बिन्दुसार को पूर्वी समुन्द्र (बंगाल की खाड़ी) और पश्चिमी समुन्द्र (अरब सागर) तक के सारे प्रदेश का अधिपति बना दिया।

यूनानी विवरणों के अनुसार बिन्दुसार आमोद-प्रमोद में ही मस्त रहता था। उसने यूनान, मिश्र, सीरिया आदि देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये। यूनानी राजदूत डैमेकस" उसके दरबार में आया तथा

...ता था। उसके ...

तथा मिस्र के शासक ने भी एक राजदूत 'डायोनीसियस' भारत भेजा था। बिन्दुसार में चन्द्रगुप्त मौर्य का शौर्य और उसकी कूटनीति विद्यमान थी। एक ओर उसने चन्द्रगुप्त की दक्षिण विजय को स्थायी रखा तो दूसरी ओर भारत में विद्रोहों को भी दबाया। परन्तु इस राजनीतिक रुची के साथ-साथ दर्शन के प्रति भी उसकी अगाध आस्था थी। इसलिए उसने सीरिया के राजा से यूनानी दार्शनिक की माँग की थी। उसकी सांस्कृतिक रुचि का परिचय उसके और सीरिया के शासक के बीच हुए पत्र-व्यवहार से मिलता है। पश्चिम देशों के साथ सम्बन्ध उसकी सफल विदेश नीति का प्रमाण है। वह विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णु और उदार था।

~~पुराणों के अनुसार~~ बिन्दुसार ने 25 वर्षों तक पुराणों के ~~अनुसार~~ शासन किया किन्तु महावंश के अनुसार 27 वर्षों तक डॉ० राधा कुमुद मुकर्जी बिन्दुसार की मृत्यु तिथि ई० पू० 272 मानते हैं और कुछ अन्य विद्वान ई० पू० 270